इकाई 7 उपनिषदों और गीता से प्रभावित पश्चिमी सभ्यता

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 उपनिषदों का लैटिन एवं अन्य अनुवाद

7.3 उपनिषदों का पश्चिमी विचारों पर प्रभाव

7.4 उपनिषदों का पूर्वी विचारों पर प्रभाव

7.5 भारत में गीता का अनुवाद

7.6 यूरोपीय देशों में गीता का अनुवाद

7.7 इंग्लैण्ड में अनुवाद

7.8 फ्रांस में गीता का अनुवाद

7.9 जर्मन में गीता का अनुवाद

7.10 गीता का पाश्चात्य विद्वानों पर प्रभाव

7.11 सारांश

7.12 शब्दावली

7.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.14 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

7.0 उद्देश्य

- गीता और उपनिषद् का संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- उपनिषद् शब्द का अर्थ एवं उसके दार्शनिक महत्व को जान सकेंगे।
- उपनिषद् और गीता में निहित सांस्कृतिक मूल्यों का पश्चिमी देशों पर प्रभाव को जान सकेंगे।
- उपनिषद् गीता और पश्चिमी सभ्यता के मध्य समान बिन्दुओं को रेखांकित कर सकेंगे।
- उपनिषद् और गीता पर पाश्चात्य विद्वानों के मत को समझ सकेंगे।
- उपनिषद् और गीता के अनुवादक भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

भारतीय दर्शन जगत् में प्रस्थानत्रयी के नाम से प्रसिद्ध 'उपनिषद्' को आदिम ग्रन्थ के रूप में मान्यता प्राप्त है तथा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के रूप में महत्व रखता है। वेदान्त दर्शन के तीन भागों श्रुति, स्मृति तथा न्याय में से श्रुति के अन्तर्गत उपनिषदों की गणना की जाती है। उपनिषद साक्षात् कामधेनु है तथा भगवद्गीता उपनिषद् रूपी

कामधेनु का अमृतमय पथ्य है। गीता में लिखा है कि "सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः" अर्थात् समस्त उपनिषद गौ स्वरूप हैं तथा ग्वालों के प्रिय श्रीकृष्ण उनका दोहन करने वाले हैं। अध्यात्म प्रधान भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिक ज्ञान के प्रतिपादन का श्रेय वेदान्त अर्थात् उपनिषदों को ही प्राप्त है । मानव जीवन का चरम लक्ष्य पारमार्थिक सत्य का ज्ञान प्राप्त करना है।

उपनिषद् इसी कारण प्रामाणिक ग्रन्थ माने जाते हैं तथा इसके अर्न्तगत उपनिषद् सर्वप्राचीन ग्रन्थ के रूप में मान्यता प्राप्त है। इनको वेदों का अन्तिम भाग माना जाता है। आचार्य सदानन्द जी ने वेदान्तसार में लिखा है 'वेदान्तो नाम उपनिषत्प्रमाणं तदुपकारीणि शारीरक सूत्रादीनि च' अर्थात् वेदान्त शब्द उपनिषद के रूप में प्रामाणिक माना जाता है तथा इसकी व्याख्या शारीरक सूत्रादि में की गई है। उपनिषद् वस्तुतः भारतीय दर्शन के मूल आधार है।

'उप' तथा 'नि' इन दो उपसर्गों के बाद सद् धातु से क्विप् प्रत्यय लगाकर उपनिषद् शब्द निष्पन्न होता है । साधारणतः इसका अर्थ होता है गुरु के समीप (उप) बैठकर (निषद्) प्राप्त किया गया ज्ञान है। फिर भी सद् धातु के तीन अर्थों से आध्यात्मिक उत्कर्ष वाले निर्वचन किये गये हैं। सद् धातु के तीन अर्थ हैं– विशरण (नाश) गति (ज्ञान या प्राप्ति) तथा अवसादन (शिथिल करना) । इसीलिए शंकराचार्य ने कहा है कि 'उपनिषाधयति सर्वानर्थकरं संसारं विनाशयति, संसारकारणभूतामविद्यां च शिथिलयति ब्रह्म च गमयति' अर्थात् सभी अनर्थों को उत्पन्न करने वाले संसार (जीव का बार–बार जन्म–मरण होना) का यह विनाश करती है, संसार के हेतु स्वरूप अविद्या को शिथिल करती है और ब्रह्म की प्राप्ति (अवगति – ज्ञान) कराती है।

उपनिषदों का अध्ययन एकान्त में गुरु के प्रसाद से होता रहा है अतः उन्हें 'रहस्यविद्या' भी कहते हैं। उनमें मुख्य रूप से ब्रह्म, सृष्टि, जीव, आत्मा, प्राण, पुनर्जन्म, कर्म तथा नैतिकता का विवेचन है। उनमें उपदेश की अनेक विधियों का प्रयोग मिलता है।

शंकराचार्य ने भाष्य में लिखा था। उनके विषय में यह प्रसिद्ध श्लोक है–

ईश–केन–कठ–प्रश्न–मुण्ड–माण्डुक्य–तित्तिरिः।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा ।।

अर्थात शंकराचार्य ने उपनिषदों की संख्या मुख्यरूप से १० स्वीकार की है जो निम्न हैं जिन पर इनका भाष्य भी प्राप्त होता है।

1) ईशोपनिषद्
2) केनोपनिषद्
3) कठोपनिषद्
4) प्रश्नोपनिषद्
5) मुण्डकोपनिषद्
6) माण्डूक्योपनिषद्
7) तैत्तिरीयोपनिषद्
8) ऐतरेयोपनिषद्
9) छान्दोग्योपनिषद्

7.2 उपनिषदों का लैटिन एवं अन्य अनुवाद

उपनिषदों के फारसी अनुवाद की पाण्डुलिपि 'आनक्वेतिल टु पोरो' (1731–1805) नामक एक फांसीसी महान विद्वान के हाथों में उस समय प्राप्त हुई जिस समय वह भारत में भ्रमण करके पूर्व के धर्मों का अध्ययन कर रहे थे। उन्होंने अन्य पाण्डुलिपियों से तुलना करके उन सभी 52 उपनिषदों का लैटिन में (1801–1802) में अनुवाद कर इन ग्रन्थों ने यूरोप का ध्यान न केवल उपनिषदों की ओर ही नहीं बल्कि भारत की ओर भी आकृष्ट किया।

ऐतिहासिक महत्त्व और प्रभाव की दृष्टि से संस्कृत उपनिषदों के साथ इन लैटिन संस्करणों का भी स्मरण करना होगा। इस अनुवाद संकल्प से समस्त पश्चिमी देशों में उपनिषदों का ज्ञान फैल सका। इसके अध्ययन के बाद ही शाँपेनहावर उपनिषद् के अपूर्व आराधक बन गये । सांस्कृतिक सम्पर्क के यशोगान के बीच इतनी गरिमामय घटना अन्यत्र दिखाई नहीं पड़ेगी। यह अनुवाद अपूर्व सम्भावनाओं से भरे दृष्टान्त प्रस्तुत करते हैं। तीन संस्कृतियाँ यहाँ आलिंगनबद्ध होकर खड़ी है। यह भारत के तत्वज्ञान की आदिम सम्पदा को इस्लाम के हाथों यूरोप द्वारा वात्सल्यपूर्वक अपनाएँ जाने के सांस्कृतिक समागम का अलौकिक दृष्टान्त है। मुण्डकोपनिषद् के विख्यात मन्त्र **ब्रह्मविद ब्रह्मैव भवति (3.29)** का अनुवाद करके इसे उपनिषद के प्रस्तावना वाक्य के रूप में रखा गया है।

इन लैटिन अनुवाद के पण्डित–पाठकों का विचार है कि इसका ऐतिहासिक महत्त्व चाहे कितना भी क्यों न हों किन्तु एक अनुवाद के रूप सम्भव नहीं है। फारसी अनुवाद काफी स्वतन्त्र है । किन्तु इस लैटिन को तो पढ़ना भी कठिन कार्य है। पाल डॉयसन का विचार है कि शॉपेनहावर इस अनुवाद को अध्ययन कर उपनिषदों की उज्जवलता से अवगत हो गए थे तो यह उनकी अन्तर्दृष्टि की महिमा से ही हुआ होगा। ऐसा होने के बावजूद यूरोप के उत्सुक पाठकों ने इसका अध्ययन किया होगा। इसके माध्यम से यूरोप में एक उपनिषद् युग का उद्भव हो गया था। यह जो कुछ सम्भव हुआ उसका सारा श्रेय उपनिषदों को ही देना पड़ेगा। यदि कृति इतनी महत्त्वपूर्ण न होती तो नीरस अनुवाद होते हुए भी उसे इतना आदर नहीं मिलता। इस अनुवाद श्रृंखला चल पड़ी। सामान्य रुप से अनुवाद के अनुवाद का अनुवाद नहीं होता। अंग्रेजी अनुवादक 'राबर्ट एर्नेस्ट ह्यूम' भी इस बात से बड़े आश्चर्य चकित थे और उन्होंने कहा कि इस तरीके से एक आध्यात्मिक कृति का उत्तरोत्तर तीसरा अनुवाद न तो कभी हुआ और न कभी होगा बिब्लियोथेका इंडिका नामक (Bibliotheca Indica) नामक विश्वविख्यात ग्रन्थावली में रोवट (1805– 66) नाम के एक जर्मन विद्वान ने तैत्तरीय, ऐतरेय, श्वेताश्वतर, केन, ईश, कठ, प्रश्न, माण्डूक्य आदि उपनिषदों का अनुवाद 1853 में किया। इसके अतिरिक्त भी प्रसिद्ध जर्मन विद्वान मैक्समूलर के अनुवाद "विश्व पौरस्त्य ग्रन्थावली (Sacred books of the East) के प्रथम खण्ड 1879 ई० और पन्द्रहवें खण्ड (1884) में आये हैं। यद्यपि वह एक ख्याति प्राप्त विद्वान् थे फिर भी उनके अनुवाद को इतना अच्छा नहीं कहा जा सकता।

मैक्समूलर उपनिषदों के अनुवाद की सभी कठिनाइयों से परिचित थे। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि उपनिषदों का अनुवाद असम्भव था। इन कमियों और कठिनाइयों के होते हुए भी यह ग्रन्थमाला उपनिषदों को विश्वस्तर पर प्रतिष्ठित करने में सफल रही है।

पॉल डायसन ने उपनिषदों का दर्शन (Philosophy of Upanishads) नामक अद्वितीय ग्रन्थ के जरिए उपनिषदों को समग्र और सांगोपांग अध्ययन विश्व के सामने प्रस्तुत किया था। उन्होंने उपनिषदों का प्रामाणिक और वैज्ञानिक अनुवाद भी प्रदान किया था। यह अनुवाद ज्ञान की गहनता और विशालता के कारण उपनिषदों की गरिमा के सर्वाधिक अनुरूप है। यह ग्रन्थ पाश्चात्य कलाकारों, विचारकों तथा लेखकों के मन को उपनिषदों की ओर उन्मुख कर सका। उन्होंने लिखा है कि उपनिषदों के भीतर जो दार्शनिक कल्पना है, वह भारत में तो अद्वितीय है ही सम्भवतः सम्पूर्ण विश्व के लिए भी अतुलनीय है–"Philosophical conceptions unequalled in India or perhaps anywhere else in the world"

बृहदारण्यक के दकार त्रय के उद्‌बोधन के बारे में मैक्समूलर1884 ई. से पहले ही लिख चुके थे किन्तु इलियट ने अपनी अलौकिक कविता 'ऊसर भूमि' के विरामखण्ड को विचार को रमणीय बनाने के लिए उस भाव को मैक्समूलर से नहीं, डायसन की ज्ञानकोश से ढूँढ़ निकाला था।पढ़े–लिखे लोगों के लिए सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवादक राबर्ट एर्नेस्ट ह्यूम के प्रमुख तेरह उपनिषद् (The Thirteen principal Upanishads. 1921) है। अनुवाद में उपयोग किया गया प्रत्येक शब्द जाँच परख कर रखा गया। इस अनुवाद में सभी जगह अनुवादक की बुद्धिमत्ता देखी जा सकती है। जिसे पश्चिमी विद्वानों की स्वयं को श्रेष्ठ मानने वाली बुद्धि या भारतीयों की राष्ट्रप्रेम की दृढ इच्छा भी प्रभावित नहीं कर सकती है।

उन्नीसवीं शताब्दी के जर्मन–भारतीय विद्वानों में उपनिषदों का अनुवाद करके टीका सहित प्रकाशित किया है–

1) **आटो वोन वोटलिंक** ने 1815–1904 में कठ, प्रश्न आदि उपनिषदों का अनुवाद करके टीका सहित लिपजिंग से प्रकाशित किया है।

2) **चार्ल्स जानस्टन** ने 1896 में कठ, प्रश्न, छान्दोग्य आदि का अनुवाद डबलिन से प्रकाशित किया था। इसके प्राक्कथन में उपनिषदों के बारे में कई आत्मीयतापूर्ण उल्लेख है।

3) **जी०आर०एस० मीड़ तथा जगदीश चन्द्र चट्टोपाध्याय** के संयुक्त प्रयास से थियोसोफिकल सोसायटी (ब्रह्मविद्या) के तत्वावधान में 1896 में कई खण्डों वाला एक संकलन लन्दन से प्रकाशित किया गया था। इसमें नौ उपनिषद् शामिल थे। इन्होंने उपनिषद् की भूमिका में लिखा है कि उपनिषद् विश्वधर्म ग्रन्थ (world Scripture) हैं और सारे वर्गों और सभी युगों में सभी धर्म और सत्य को मानने वालों को आकृष्ट करते रहे हैं।

इसके अतिरिक्त केनोपनिषद् का अंग्रेजी अनुवाद हिरियन्ना और वरदाचार्य ने किया। हिरियन्ना ने बृहदारण्यकोपनिषद् का भी अनुवाद किया । मैत्रेयोपनिषद् का ई०वी० कोवेल ने, तैत्तरीयोपनिषद् का महादेव शास्त्री ने, छान्दोग्य उपनिषद् का गंगानाथ झा ने, वैष्णवोपनिषद् का टी०आर० श्री निवास अयंगर ने अंग्रेजी अनुवाद किया। उपनिषदों के अनुवाद बहुत बड़ी संख्या में किये गये हैं।

7.3 उपनिषदों का पश्चिमी विचारों पर प्रभाव

1) उपनिषदों के अनुवादों का गहरा असर शोपेनहॉवर पर हुआ। शोपेनहॉवर की मेज पर उपनिषदों की एक लैटिन प्रति रहती थी और वे सोने से पहले उसमें से ही अपनी प्रार्थनाएँ किया करते थे। उपनिषदों के सन्दर्भ में शोपनेहावर के विचार हैं कि –**"उपनिषदों के प्रत्येक वाक्य में से गहन, मौलिक और उदात्त विचार निकलते हैं और सभी कुछ एक उच्च, पवित्र और एकाग्र भावना से व्याप्त हो जाता है । समस्त संसार में उपनिषदों जैसा कल्याणकारी और आत्मा को उन्नत करने वालाकोई और ग्रन्थ नहीं है।** ये सर्वोच्च प्रतिभा के प्रतीक हैं। देर–सवेर में ये लोगों की आस्था का आधार बनकर रहेंगे। उपनिषद् में सर्वत्र कितनी सुन्दरता के साथ वेदों के भाव प्रकाशित हैं, जो कोई भी उक्त फारसी लैटिन अनुवाद का ध्यान देकर अध्ययन करके उपनिषद् की अनुपम भावधारा से परिचित होगा, उसी की आत्मा के गम्भीरतम प्रदेश में एक हलचल मच जायेगी। एक–एक पंक्ति कितनी दृढ़, स्पष्ट अर्थ प्रकट कर रही है । सम्पूर्ण ग्रन्थ कैसे उच्च, पवित्र तथा ऐकान्तिक भावों से ओत–प्रोत है। सारे भूमण्डल में मूल उपनिषद् के समान इतना फलोत्पादक और उच्च भावोत्पादक ग्रन्थ कहीं भी नहीं है। इसने मुझको जीवन में शान्ति प्रदान की है और मरने पर भी यह शान्ति देगा।**"**

2) पाश्चात्य विद्वान मैक्समूलर के अनुसार "यदि शोपेनहावर के इन उपनिषद् सम्बन्धी शब्दों के लिए किसी समर्थन की आवश्यकता है तो मैं अपने जीवन भर के अध्ययन के आधार पर प्रसन्नतापूर्वक अपना समर्थन दूँगा।" उन्होंने अपनी पुस्तक " India what can it teach us" में लिखा ''कि मृत्यु के भय से बचने के लिए पूरी शक्ति से तैयारी करने और सत्य को जानने के इच्छुक जिज्ञासु के लिए उपनिषदों के अतिरिक्त और कोई श्रेष्ठ मार्ग मेरी दृष्टि में नहीं है। उपनिषदों के ज्ञान से मुझे अपने जीवन के उत्कर्ष में भारी सहायता मिली है। मैं उनका ऋणी हूँ। ये उपनिषदें आत्मिक उन्नति के लिए विश्व के धार्मिक साहित्य में अत्यन्त सम्मानास्पद रही है और आगे सदा रहेंगी। यह ज्ञान मनीषियों की महान प्रज्ञा का परिणाम है। एक न एक दिन भारत की यह श्रेष्ठ विद्या यूरोप में प्रकाशित होगी तब हमारे ज्ञान एवं विचारों में महान परिवर्तन उपस्थित होगा।''

3) 'ogmas of Bhuddism' नामक ग्रन्थ के लेखक डी० ह्यूम ने लिखा है कि सुकरात, अरस्तू, अफवावून आदि कितने दार्शनिकों केग्रन्थ मैंने ध्यानपूर्वक पढ़े हैं, पर जैसी शान्तिमयी आत्मविद्या मैंने उपनिषदों में पायी वैसी और कहीं अनुभव नहीं की।

विण्टरनित्स के अनुसार उपनिषदों के रहस्यमयी सिद्धान्तों की एक विचारधारा के चिह्न फारसी, सूफीधर्म के रहस्यवाद में, नवप्लेटोवादियों और सिकन्दरिया के ईसाई रहस्यवादियों, एकहार्ट और यलेर के गुहा ब्रह्मविद्या सम्बन्धी लोगस सिद्धान्त में और अन्त में उन्नीसवीं शताब्दी के महान् जर्मन रहस्यवादी शोपेनहावर के दर्शन में खोजे जा सकते हैं।

7.4 उपनिषदों का पूर्वी विचारों पर प्रभाव

उपनिषदों को समझने के लिए इनके ऋषियों के दृष्टिकोण को समझना आवश्यक है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि "उपनिषदों का अध्ययन करने पर उनके नेत्रों से

अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती है।उपनिषद् शक्ति का मूल है । उसमें प्रवाहित शक्ति से बल, शौर्य तथा नव जीवन का संचार होता है। इनके सन्देश से व्यक्ति स्वाश्रित होकर भवबन्धनों से मुक्त होने का प्रयास करता है। शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक उन्मुक्तता का प्रयास तथा आत्मोन्नति उपनिषदों का मूल मन्त्र है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार उपनिषद् ज्ञान की आवश्यकता केवल ब्रह्म प्राप्ति के लिए ही नहीं अपितु दैनिक जीवन के लिए भी उपयोगी है। उपनिषदों से वह शक्ति प्राप्त होती है, जिसके द्वारा मानव जीवन संग्राम का धैर्य तथा साहसपूर्वक सामना कर सकता है। जीवन के आध्यात्मिक तथा भौतिक उभय क्षेत्र में उपनिषदों की आवश्यकता है।

विश्वकवि रविन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार ''चक्षु सम्पन्न व्यक्ति देखेंगे कि भारत का ब्रह्मज्ञान सम्पूर्ण पृथ्वी का धर्म बनने लगा है। प्रातःकालीन सूर्य की अरुणिम किरणों से पूर्व दिशा आलोकित होने लगी है, परन्तु जब वह सूर्य मध्याह्न गगन में प्रकाशित होगा, तब उस समय उसकी दीप्ति से समस्त भूमण्डल दीप्तिमय हो उठेगा।''

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने अपनी पुस्तक ''उपनिषदों का सन्देश'' में लिखा है कि "उपनिषदों को जो भी मूल संस्कृत में पढ़ता है, वह मानव आत्मा तथा परम सत्य के गुहा तथा पवित्र सम्बन्धों को उजागर करने वाले तथा उनके बहुत से उद्‌गारों के उत्कर्ष काव्य और प्रबल सम्मोहन से मुग्ध हो जाता है और उसमें बहने लगता है।''

आचार्य बिनोवा भावे ने अपनी पुस्तक 'उपनिषद् एक अध्ययन' में लिखा है कि "उपनिषदों की महिमा अनेक दिव्यात्माओं ने गायी है । कवि ने कहा है कि हिमालय जैसा पर्वत नहीं तथा उपनिषदों जैसी कोई पुस्तक है ही नहीं वह तो एक दर्शन है।''

इस प्रकार उपनिषदों के आकर्षण में अद्वितीय विविधता के दर्शन होते हैं। धार्मिक खोज की व्याकुलता तथा तत्परता इनमें दिखायी देती है। इनके विचारकों के द्वारा वर्णित विषयों में आदर्शवादिता, दार्शनिकता तथा सत्य के अनवरत अन्वेषण की लालसा दिखायी देती है। उपनिषदों के विचारों के द्वारा बाह्य आकर्षणों से ऊपर उठने की प्रेरणा प्राप्त होती है। इसमें वर्णित शाश्वत सत्य ज्ञान तथा आत्मिक शक्ति से अन्तर्दृष्टि तथा आन्तरिक बल प्राप्त होता है, जिसमें नव ऊर्जा का संचार होता है । उपनिषद्, व्यवस्थित चिन्तन से अधिक आत्मिक प्रकाश के साधन प्रतीत होते हैं। इनके द्वारा विविध प्रकार के आत्मिक अनुभव का संसार उद्‌घाटित हुआ है। इनके द्वारा व्यक्त किये गये सत्य की पुष्टि केवल तर्क बुद्धि के द्वारा ही नहीं अपितु स्वानुभूति से होती है । इनका उद्देश्य व्यावहारिक है।

पश्चिम में गीता

श्रीमद्‌भागवद्‌गीता को प्रस्थानत्रयी के अन्तर्गत माना गया है। गीता उपनिषद् और ब्रह्मसूत्र तीनों ग्रन्थ प्रस्थानत्रयी के अर्न्तगत परिगणित हैं। इनके माध्यम से आत्मतत्त्व के प्रत्यक्षीकरण एवं मनुष्य को आत्मा से साक्षात्कार कराया जाता है। श्रीमद्‌भागवद्‌गीता श्रीकृष्णद्वैपायन वेदव्यासकृत महाभारत के भीष्मपर्व का पच्चीसवें अध्याय से बयालीसवें अध्याय तक का संग्रह ग्रन्थ है। इस प्रकार इस कृति के रचयिता श्री वेदव्यास जी है। इसके विषय में भी स्पष्टोल्लेख है कि–

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।

या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता ।।

अद्वितीय एक परमात्मा श्रीकृष्ण का वचनामृत श्रीमद्भागवद्गीता भी अद्वितीय ग्रन्थ के रूप में निरूपित हैं–

एकं शास्त्रं देवकी पुत्र गीत–
मेको देवो देवकीपुत्र एव
एको मन्त्रस्त्यस्य नामानि यानि
कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा।।

नवनवोन्मेष प्रज्ञा समन्विता सचिन्तन परिपूर्णा एवं प्रतिक्षण नवीनता के सच्चिदानंद रूप से साक्षात्कार कराती हुई यह परमरम्या या रमणीयता का सुरूप है।

इस के लिए यह सूक्ति सार्थक है–

''क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदैव रूपं रमणीयतायाः।'' (माघकवि)

1935 से लेकर 1941 तक दो प्रकार के अनुवाद सामने आये। उन्होंने प्रमुख भारतीय और पश्चिमी विद्वानों को एक साथ एकत्रित करने का प्रयास किया। जिसे पूर्व की आध्यात्मिक प्रमाणिकता और भगवद्गीता की सार्वभौमिक प्रासंगिकता को कायम रखने में बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। ये दोनों प्रकार के अनुवाद प्रतीकात्मक थे। ये संस्कृत से सीधे यूरोपीय भाषा में अनुदित होने के कारण मुख्य रूप से जाने गये पाठ होने की प्रतिष्ठा अर्जित की और इन्होंने गीता की ओर यूरोप और अन्य क्षेत्रों में ध्यान आर्कषित किया।

इन प्रारम्भिक अंग्रेजी अनुवादों की एक विशेषता यह थी कि इन्होंने गीता को हिन्दू धर्म के भीतर उच्च अमूर्त दार्शनिक विचारों की अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया, जो इसके निचले, लोकप्रिय अंधविश्वासपूर्ण रूप से मिली थी। इसके साथ ही विल्किन्स के अनुवाद के प्रकाशन के एक साल बाद सर एडविन अर्नाल्ड ने गीता को रिक्त कविता "The song celestial'' के रूप में 1885 ई० अनुदित किया। इसने गीता के सबसे महत्त्वपूर्ण और सबसे व्यापक रूप में पढ़ने वाले संस्करण के रूप में प्रसिद्धि हासिल की। इन्होने ही गाँधी जी को जीवन भर गीता पढ़ने के लिए प्रेरित किया।

7.5 भारत में गीता का अनुवाद

भारत में अनुवाद करने वाले विद्वानों के लिए भगवद्गीता एक पवित्र पुस्तक है। क्योंकि उनका यह विश्वास था कि गीता अभी भी जीवंत रूप से जीवित है और नित्य नवीन ज्ञान से खुद को पुनर्जन्म करती रहेगी। गीता का अनुवाद करना और आन्तरिक अर्थ की व्याख्या करना एवं साथ ही भारतीयों को शिक्षित करने का भी एक कार्य हैंय और सत्य को फैलाने के लिए एक कर्तव्य के रूप में था । यह गीता को एक सार्वभौमिक संदेश के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास भी था और हिन्दू धर्म का अन्य कठोर धार्मिक धर्मों के विपरीत जीवन के एक खुले अंतदृष्टिकोण के रूप में था।

अनुवाद में लगे भारतीयों की बहुत बड़ी संख्या ने भगवद्गीता को सर्वोच्च हिन्दू दार्शनिक विचारों के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया। उदाहरण स्वरूप तिरुवलुमसुव्वारो की पुस्तक "Discourse on the Bhagavad gita'' (1888) और R. Shivshankar Pandiyaji's का अनुवाद Bhagavad gita sara Bodhini or the Essential Teaching of the Bhagavad gita (1897) में अनिवार्य एवं आवश्यक शिक्षण

पर अपने दर्शन का अध्ययन करने हेतु तथा छात्रों की मदद करने के लिए किया गया था।

20वीं सदी के प्रारम्भ में भारतीयों ने विशेष रूप से राष्ट्रवादियों ने औपनिवेशिक भारत के बीच गीता को उभरते हुए भारतीय राष्ट्रीय सदाचारोंके केन्द्रीय कार्य के रूप में बढ़ावा दिया। उनके अनुसार नया युद्धक्षेत्र ब्रिटिश राज्य का था जो समेकित सामाजिक और राजनीतिक कार्यवाही के लिए खुला रहा था जबकि इस तरह की कार्यवाही का रूप बहस का विषय ''हिंसा बनाम अहिंसा'' था ।

गीता प्रेस गोरखपुर ने बीसवी शताब्दी की शुरूआत के बीच गीता के संदेश को फैलाने का महान कार्य किया ।

काशीनाथ त्र्यंबक तेलंग और गीता

गीता को अंग्रेजी में अनुदित करने वाले प्रथम भारतीय 'काशीनाथ त्र्यंबक तेलंग' (1858–1893) थे, जो एक संस्कृत विद्वान् इंडोलाजिस्ट और बाम्बे हाईकोर्ट में न्यायाधीश थे। इन्होंने प्रथम बार 1875 में गीता को अनुदित कर पद्य रूप में प्रकाशित किया। इसे बाद में 1882 में गद्य–अनूदित खण्ड के रूप में सामने आया ।

मैक्समूलर द्वारा संपादित 'द सीक्रेट बुक्स ऑफ द ईस्ट' के 8वें वाल्यूम से 8 का शीर्षक " The Bhagavadgita with the Sanatsugatiya and the Anugita" जो कि 1882 में 'द क्लेरेंडन प्रेस आक्सफोर्ड' से प्रकाशित किया गया।

तेलंग के गीता के अनुदित खंड में 'सनात्सुजाति और अनुगीता' के अनुदित भाग भी शामिल है। सनत्सुजातीय महाभारत के उद्योग पर्व में ऋषियों सनत सुजाता द्वारा अंधे राजा धृतराष्ट्र को पढ़ाने के रूप में प्रकट होता है। यह एक दार्शनिक साहित्य है, जिसकी रचना पाँच अध्यायों में अर्थात् (अध्याय 41–46) में की गई है।

अनुगीता –अनुगीता का अर्थ है गीता का अनुसरण करने वाली। महाभारत के अश्वमेध पर्व में भगवद्गीता की अगली कड़ी के रूप दिखाई देती है। यह फिर से कृष्ण और अर्जुन के बीच सम्वाद है। यह सम्वाद इन्द्रप्रस्थ में पाण्डवों के महल में होता है, क्योंकि कृष्ण कुरूक्षेत्र के युद्ध में अपनी जीत के बाद पाण्डवों को हस्तिानापुर के राज्य को दिलाने करने में मदद करने के बाद द्वारका वापस आए थे। काशीनाथ त्र्यंबक तेलंग मैक्समूलर द्वारा संपादित "The secred Book of the east" नामक पवित्र पुस्तक के वाल्यूम में योगदान करने वाले दो विद्वानों में शामिल थे। एक स्वयं थे तो दूसरे आर० जी० भण्डारकर थे। विद्वता और विविधता की दृष्टि से तेलंग की गीता अनुवाद को भारत में अधिक लोकप्रियता मिली किन्तु इसे इंग्लैण्ड में गम्भीर रूप से ख्याति नहीं मिली।

तेलंग के बारे में एडविन अर्नाल्ड ने गीता के अपने अनुवाद परिचय में लिखा है कि "Mr- Telang has also published at Bombay a version in colloqulal rhythm] eminently learned and intelligent] but not conveying the dignity or grace of the original" अर्थात् इनके कहने का आशय यह था कि गीता का आम बोलचाल की लय में एक संस्करण प्रकाशित किया जो व्यापक रूप से प्रचलित और विद्वतापूर्ण है लेकिन यह मूल की गरिमा को व्यक्त नहीं करता है।

थियोसोफिस्ट और गीता

गीता के प्रमुख विचारों पर एक विद्वतापूर्ण गूढ़ टिप्पणी थियोसोफिस्ट देते हैं। मोहिनी मोहन चटर्जी (1858–1936) में बंगाल थियोसोफिकल सोसायटी और थियोसोफिकल मूवमेंट के महत्वपूर्ण सदस्य थे। इन्होंने गीता का अनुवाद 'Bhagavad Gita or the Lord's Lay' 1887 में किया। विलियम क्वान जज ने अपने निबंधों में गीता (1890) में महाभारत की पूरी तरह से एक तरफा व्याख्या प्रस्तुत की।

7.6 यूरोपीय देशों में गीता का अनुवाद

श्रीमद्भगवद्गीता के प्रतिक्षण नव स्वरूप से प्रभावित देशविदेश के प्रतिभा सम्पन्न अनेक मनीषी विद्वानों ने इस ग्रन्थ का गहन चिन्तन–मनन एवं अनुवाद किया और इसके मन्थन से निःसृत नवनीतरूप सद्विचारों से लोक का परिचय कराने का सदुपयोग कर अपने जीवन की सार्थकता को प्रकट किया।

भगवद्गीता का सर्वप्रथम अंग्रेजी और यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के पश्चात् एशिया में प्रसार करते हुए पश्चिमी विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया। यह विद्वानों के साथ–साथ सामान्य जनता का भी ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करते हुए अनेक व्याख्याओं को जन्म दिया।

7.7 इंग्लैण्ड में अनुवाद

1785 में गीता का अनुवाद यूरोप और अमेरिकी देशों में सर्वत्र फैल गया और लोगों को सरलता से नये–नये अनुवाद उपलब्ध होने लगे। भगवद्गीता का विस्तार होने पर उस समय इसे अर्थो और भावों के साथ विस्तारित किया।

भगवद्गीता का व्यापक प्रचार हो जाने पर इसको प्रासंगिकता के साथ समृद्ध किया गया तथा गीता के प्रासंगिक पहलुओं को सामने लाया गया। जिससे इसके नये श्रोताओं और विभिन्न जिज्ञासाओं का समाधान हुआ। भगवद्गीता के अनुवाद का रोचक इतिहास है।

श्री मिशका सिन्हा ने अपने शोधपत्र " A History of the Gita's Translational Reception 1785-1945" में बहुत ही योग्यतापूर्ण सूक्ष्म बुद्धि से गीता के अनुवाद और व्याख्या को 18वीं शताब्दी के बाद रखा।

वह अपने शोधपत्र की भूमिका में लिखती है कि – 'The Gita as a received and Translated teat was significantly altered (during this period) in certain specific ways which contines to influence its present understanding both in the west and in India-

1. चार्ल्स विल्किन्स और गीता

चार्ल्स विल्किन्स ने फारसी और बंगाली भाषा सीखी और शीघ्र ही फारसी और बंगाली कम्पनी के अधिकारिक अनुवादक के रूप में नियुक्त हो गये। उसने बंगाली लिपि में टाइपसेट को डिजाइन करने का प्रयास किया। इन्होंने 1784 में एक मणि उत्कीर्णक और विशेष लोहार, पंचाना कर्मकार की सहायता से इसे पूरी की। चार्ल्स विल्किन्स के द्वारा भगवद्गीता के अनुवाद को पहली बार नवम्बर 1784 में कलकता एशियाई सोसायटी के अनुपालन में लाया गया और बाद में

1785 में इसके लन्दन से प्रकाशित किया गया–

Bhagvat Gita or Dialogues of krishna and Arjoon; in eighteen lectures; with notes; Translated from the origin in Sanskrit, or the ancient language of the Brahmans (London: C- Novrre, 1785)

इसके पश्चात् 1809 में विल्किन्स का अनुवाद कुछ सुधार करके संशोधित संस्करणों मे क्रमशः 1849, 1985, 1959 और 1970 में प्राप्त हुआ। अपनी प्रस्तावना में विल्किन्स ने स्वयं लिखा की मेरे गीता का अंग्रेजी में अनुवाद करने का एकमात्र उद्देश्य यह था कि–

"To Incourage a form of monotheist Unitarianisms and draw Hinduesm away from the polytheism ascribed to the vedas-""

2. हेनरी डेविडि थोरो और गीता

1846 में हेनरी डेविडि थोरो ने 'Walde Pond' नामक पुस्तक में लिखा था कि "Bathing his intellectule in the stupendous and cosmogonal philosophy of the Bhagvadgita-"

3. जान डेविस और गीता

रॉयल एसियाटिक सोसायटी के सदस्य के रूप में कैम्ब्रिज फिलोलाजिकल सोसायटी के सदस्य जॉन डेविस ने विदेशी फिलोलाजिकल लाइब्रेरी द्वारा भगवद्गीता का अंग्रेजी गद्य अनुवाद किया गया। जिसे फारेन साइको लाजिकल लाइब्रेरी, लंदन, केगन पॉल पॉल ट्रेंच, दुबेनर एण्ड कम्पनी से 1882 में संस्कृत दार्शनिक कविता के रूप में विस्तृत शीर्षक "Hindu Philosophy The Bhagavad gita or the sacred Lay" के नाम से प्रकाशित किया।

डेविस ने शास्त्रीय भारतीय संस्कृति में इस पौराणिक संवाद के स्थान पर प्रकाश डाला और फिर यह जांचा कि कैसे यह विविध रचनाओं और सन्दर्भों में प्रासंगिक रहा है। वह कृष्ण के दिव्य चरित्र के आसपास की मध्ययुगीन भक्ति परम्पराओं को देखता है और बताता है कि गीता भारत से पश्चिम की यात्रा कैसे करनी है, जहाँ से राल्फ वाल्डो इमर्सन, हेनरी डेविड थोरो, जे० रॉबर्ट ओपेनहाइनर और एल्डस हक्सले जैसे व्यक्तियों और प्रशंसक से मिले। डेविस ने यह पता लगाया कि महात्मागाँधी और स्वामी विवेकानन्द जैसे भारतीय राष्ट्रवादियों ने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ अपनी लड़ाई में गीता का उपयोग कैसे किया और समकालीन व्याख्याकार आज कैसे दर्शकों के लिए इस शास्त्रीय कार्य को करते हैं।

4. एडविन अर्नाल्ड एवं उनकी गीता

एडविन अर्नाल्ड ने गीता का अनुवाद (The song celestual) के नाम से किया तथा प्रस्तावना में डेविस के गद्य प्रतिलिपि की प्रशंसा की। तथा अपनी निष्ठा और स्पष्टता के लिए प्रशंसा के परे डेविस के अनुवाद का अनुभावक भी किया है।

5. जे० काकबर्न और गीता

डेविस के गीता के अनुवाद का 1885 में संस्कृत बोर्ड एच० एच० विल्सन के छात्र (J- Cockburn Thomson) द्वारा अनुसरण किया गया जो ऑक्सफोर्ड में गीता के

मूल संस्कृत पाठ से संसोधित अनुवाद का उत्पादन है – "The gita or a Discourse between krishna Arjuna on Divine matters (a sanskrit philosophical poem translated with copious notes) an introduction to sanskrit philosophy and other matters " जिसे 'Staphen Aurtin Hertjord' के द्वारा 1835 में प्रकाशित किया गया।

थामसन के अनुसार विल्किन्स का अनुवाद "For from giving a clcar idea of the work and stile less of its philosophy" को फलूशिंग न्यूयार्क से प्रकाशित किया।

6. चार्ल्स जानस्टन और गीता

बंगाल में एक सेवानिवृत्त अंग्रेजी सिविल सेवक एवं एक संस्कृत विद्वान चार्ल्स जानस्टन ने भगवद्गीता का अनुवाद "The Bhagavad gita the song of the mastur" के नाम से 1908 में चतुर्थ संस्करण का अंग्रेजी अनुवाद किया। 1908 में इन्होंने अपनी लम्बी प्रस्तावना में प्राचीन ज्ञान के बारे में कहा है कि – "The Bhagavad gita is one of the noblest resiptores of India, one of the deepest scriptures of the world a symbolic scripture, with many meanings, containing many truths (that) forms the living heart of the eastern wisdom.

7. स्वामी प्रभवानंद और गीता

1944 में गीता का अनुवाद स्वामी प्रभवानंद ने किया। स्वामी प्रभवानंद श्री रामकृष्ण आश्रम का एक भिक्षु था जो 1923 में संयुक्त राज्य अमेरिका गया। शुरू में वह सेनफ्रांसिस्कों के वेदांत सोसायटी से जुड़ा। दो वर्ष के बाद इसने पौर्टलैण्ड में वेदान्त सोसायटी की स्थापना की। दिसम्बर 1929 में वह त्वांइस एजिल्स चला गया जहाँ उन्होंने 1930 में दक्षिणी कैलफोर्निया में वेदान्त सोसायटी की स्थापना की जिसने आगे चलकर एक बहुत ही प्रभावशाली संगठन के रूप में प्रसिद्धि पायी। स्वामी प्रभवानन्द एक उच्च स्तर के विद्वान थे जिन्होंने वेदान्त और अन्य भारतीय दर्शन पर टिप्पणियाँ लिखी। इन्होंने एडक्स हक्सले, जेराण्ड हेर्ड, फ्रेडरिक मैनचेटर और किस्टोफर इशवर वुड जैसे कई विद्वानों का ध्यान आर्कषित किया।

स्वामी प्रभवानंद द्वारा लिखी गई कई पुस्तकों में से भगवद्गीता का अनुवाद किस्टोफर इशवर वुड के सहयोग से 1944 में "The song of God : Bhagavad & Gita" के नाम से "M- Rodd Co- " Hollywood" से प्रकाशित किया गया। इसमें एडल्स हक्सले द्वारा भूमिका लिखी गई। ''द टाइम मैगजीन 1945 में अपनी समीक्षा में इस अनुवाद को एक विशिष्ट साहित्यिक कार्य के रुप में प्रशंसा की जो अन्य अंग्रेजी अनुवादों की तुलना में सरल था।

8. एकनाथ ईश्वरन और गीता

"The Bhagavad Gita (classics of Indian spirituality) By Eknath Easwaran: The Blue mountaion center of meditation 1985.

'Bhagvada gita : The song of god, writteen by swami Pra Bhavanand & christofar Introduced by Aduld huxaly Huxlly published by vedanta

press U-S-A Hollywood M- Rodd-co-1944.

9. **जे० एवी० बुइटेन द्वारा अनुवादित एवं जेम्स एल फिटजरगाल्ड द्वारा सम्पादित एवं गीता,**"The Bhagavadgita in the Mahabharata : A Bilingual Edition Translated by J-A- B- Van Buitcenen- Edited by James L- Fitzerald. The university Chicago Press, Chicogo, 1981'.

7.8 फ्रांस में गीता का अनुवाद

1. जीन डेविस लांजुनाइस और गीता

गीता का एक फ्रांसीसी अनुवाद संस्कृत से जीन डेनिस लांजुनाइस द्वारा 1832 ई० में किया गया और इसको बाद में प्रकाशित किया गया। और उन्होंने इंगित किया कि यह एक महान आश्चर्य का विषय है जो कि भारत के प्राचीन महाकाव्यों में से एक है। यह पूरी तरह से आध्यात्मिक सर्वेश्वरवाद का समर्थन करता है। 1861 में एमिले लुइस वनौफ द्वारा "La Bhagavad Gita, On lechant du Bienheureux, Pocime Indin-" के नाम से फांसीसी भाषा में अनुवाद और एक ग्रीक अनुवाद ड्रेमोटियस गैना लोस (Demeturious Bodanos) द्वारा 1848 ई० में इसे मरणोपरान्त प्रकाशित किया गया।

2. अब्बे परांदे और गीता

चार्ल्स विल्किन्स के अनुवाद का फ्रांसीसी अनुवाद फ्रांसीसी विद्वान अब्बे परांदे –'Abbe Parrand' द्वारा 1787 में (Le-Bhaguat Geeta on Dialogues de krishna and Arjoon…..) में किया गया। जिसका अनुसरण करते हुए रूसी विद्वान् निकोले इवानोबीच नोविकोव द्वारा रूसी 1787 में किया गया जिसने काउंट लियो टालस्टाय को प्रेरित किया और सभी जर्मन अनुवाद 1802 में फ्रेडरिक वान मजर द्वारा (Der Bhagavat gita, oder Gesprache Zwischen krishna and Arjoon) के नाम से किया गया।

7.9 जर्मन में गीता का अनुवाद

1. श्लेगल बन्धु और गीता

फ्रेडरिक श्लेगल जिन्हे कार्ल विल्हेम फ्रेडरिक भी कहा जाता है। ये जर्मन कवि दार्शनिक और इंडोलाजिस्ट के रूप में प्रसिद्ध थे। इन्होंने अपने बड़े भाई आगस्त विल्हेम वान श्लेगल को संस्कृत का अध्ययन करने के लिए पेरिस जाने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार श्लेगल भाइयों विशेष रूप से बड़े फ्रेडरिक को रोमांटिक स्कूल के संस्थापक के रूप में भी जाना जाता है। जिन्होंने 19वीं शताब्दी के शुरूआत में जर्मन साहित्य के विकास को गहराई से प्रभावित किया ।

आगस्त विल्हेम वान श्लेगल (1767–1845) में प्रो० वॉन, विश्वविद्यालय में इण्डोलाजी और संस्कृत के प्रोफेसर थे। इन्होंने गीता के लैटिन संस्करण को मूल संस्कृत पाठ के साथ 1803 में प्रकाशित किया। यह गीता का यूरोपीय भाषा में पहला प्रत्यक्ष अनुवाद था।

1820 और 1830 के बीच आगस्त श्लेगल ने (Indische Bibliothk) ने भारतीय ग्रन्थों का संग्रह प्रकाशित किया । इनको जर्मनी में 'संस्कृत भाषा विज्ञान' का

संस्थापक माना जाता है । इन्होंने भगवद्गीता की प्रशंसा में कहा था कि "It the study of Sanskrit had brought nothing more than the satisfaction of superb to read this upper poem in the original I would have been amply compensated for all my labours- It is a sublime reunion of Poetic and Being able philosophical genies-"

2. फ्रान्ज हार्टमैन और गीता

एक जर्मन मेडिकल डॉक्टर थियोसोफिस्ट और गूढ़ व्यक्ति डॉ० फ्रान्ज हार्टमैन द्वारा जर्मन में भगवद्गीता का एक अनुवाद " Bhagavad gita, Die (Nuch diesm Titell Suchen, whitelotous Lipzig, 1924)" में प्रकाशित किया गया ।

3. हेनसिक हिमकर और गीता

हेनसिक हिमकर एक नाजी था वास्तव में वह एक जटिल प्रकार का व्यक्ति था। फिलिन्स कस्टर्न के अनुसार 1941 ई० में मृत्यु के चार वर्षो के पहले से हिमकर अपने जेब में भगवद्गीता की एक प्रतिलिपि रखा करता था। इसे रात में नियमित रूप से अध्ययन करता था और इसका अनुवाद डॉ० हार्टमैन द्वारा किया गया था।

4. पुरोहित स्वामी और भगवद्गीता

1935 में पुरोहित स्वामी के द्वारा भगवद्गीता का अनुवाद फैबर एण्ड फैबर "The Geeta; The Gospel of the Lord Shri Krishna." के नाम से प्रकाशित किया गया। स्वामी ने अपने सत्तरवें जन्म दिन पर प्रकाशित करवाया। इस पुस्तक के प्रकाशित होने पर स्वामी और डब्लू. बी० याट्स के बीच सम्बन्ध बढ़ गया। याट्स ने अपने कुछ वर्षों को पुरोहित स्वामी के कार्यों के प्रकाशन और प्रचार के लिए समर्पित किया। दोनों ने कई पुस्तकों के प्रकाशन के लिए मिलकर काम किया।

1935 में स्वामी ने माण्डूक्य उपनिषद् का अनुवाद प्रकाशित किया जिसके लिए याट्स ने एक भूमिका लिखि। इसके पश्चात् 1938 में पतंजलि के योग का अनुवाद "Translations of Patanjali's Apporism of yoga" के नाम से दस मुख्य उपनिषदों का अनुवाद याट्स की भूमिका के साथ फैबर एण्ड फैबर से प्रकाशित किया।

वाट्स ने आक्सफोर्ड ऑफ मॉर्डन कविता में 1892–1935 में स्वामी के अनुवादों को शामिल किया।

7.10 गीता का पाश्चात्य विद्वानों पर प्रभाव

गीता का अनुवाद 50 से अधिक भाषाओं में किया गया है । पूर्वी और पश्चिमी भाषाओं में इस पर सैकड़ों टिप्पणियाँ है। भारत के बाहर गीता को हिन्दू धर्म को समझने का पहला माध्यम और सबसे प्रथम कार्य माना जाता है।

1. Richard H- Davis

"The Bhagavad Gita : A Biography, Princeton university" में लिखते है कि "The work has lived a Vivid and contentious existence over the centuries since, through readings and recitations translations and commentaries that have transcribed this classic into many currents and disputes-

Thus the medival Hindu Gurus, British colovial scholars, German romantics, Globetrotting spiritual speakers, Indian anticalonial Freedom fighters, western students and spritual seekers all have engaged in dialogue with the Gita, each in his/her own manner-

अर्थात् कहने का आशय यह है कि भगवद्गीता प्रायः सभी भारतीय शास्त्रों में सबसे प्रसिद्ध है जिसे सार्वभौमिक रूप से दुनिया की आध्यात्मिक और साहित्यिक कृतियों में से एक माना गया है। रिर्चड डेविस ने इस पूजनीय और स्थायी पुस्तक की कहानी को प्राचीन भारत में इसकी उत्पत्ति से लेकर आज के आगमन तक एक आध्यात्मिक साहित्य (क्लासिक) के रूप में बताया है। जिसका अनुवाद सरल ढंग से अधिक भाषाओं में किया गया है।

2. चाल्स विल्किन्स

विल्किन्स के साहित्यिक गुणों की प्रशंसा करते हुए वारेन हेस्टिग्स ने कहा है कि "A Performance of great originality of a sublimity of conception] reasoning and diction almost unequalled, and single exception among all the known religions of Man kind of a theology accurately corresponding with that of the Christion dispensation and most powerfully illustrating its fundamental doctrines-"

हेस्टिम्स ने बल देते हुए कहा है कि गीता की शिक्षाओं का अध्ययन और सही अभ्यास मानवता को शांति और आनन्द प्रदान करने के लिए है इन्होंने कुछ अनुदित पंक्तियों को लिखते हुए कहा है कि –

- Let the motive be in the Deed and not in the event.
- Be not one whose motive for Action is the hopes of Reward. let not the life be spent in inaction depend on application-
- Perform the Duty, abandon all thought of the consequence, and make the event Equal it terminate in good or evil; or such an equality is called application.

विलियम हेस्टिग्स को यह विश्वास था कि भारत में ब्रिटिस वर्चस्व तब तक अस्तित्व में रहेगा जब तक गीता जीवित रहेगी।

इन दोनों ने अनुमान लगाया था कि गीता में ब्रिटिश रूचि सबसे अधिक होगी और इसके सांस्कृतिक वस्तु की ओर जिज्ञासा उत्पन्न की जायेगी। उनका अनुमान था कि यह पहलू अन्ततः इंग्लैण्ड में अपने पाठकों के लिए सबसे अधिक संकेत देने वाला ज्ञान साबित होगा ।

गीता ने शुरूआत में मुख्य रूप से दूरदराज के पूर्व के अज्ञात अतीत या मानव सभ्यता के अपरिपक्व और आदिम चरण के एक झलक के रूप में उत्सुक सांस्कृतिक वस्तु के रूप इंग्लैण्ड में प्रचार प्राप्त किया।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि गीता का महत्त्व किसी भी आतंरिक गुणवत्ता में नहीं था लेकिन इसके मूल्य के पौराणिक कथाओं का एक उत्सुक नमूना और हिन्दुओं के विश्वास और धार्मिक विचारों के एक प्रामाणिक मानक के रूप में उपलब्ध था।

अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के शुरुआत में भगवद्गीता को काव्यगीत या पवित्रशास्त्र के रूप में मानने के अपेक्षा दार्शनिक प्रकृति के साहित्य के रूप में माना जाने लगा। विल्किन्स के इस कार्य ने सामान्य पाठकों के अतिरिक्त ईसाई मिशनरी का ध्यान आर्कषित किया तथा हिन्दू सिद्वान्तों का सामना करने के लिए इसका इस्तेमाल किया।

3. विलियम ब्लैक

विलियम ब्लैक ने 1809 में अपनी तस्वीर 'द रोमिन' में रोमांटिक काव्य बताया और अनुवाद पर कार्य कर रहे विल्किन्स और विद्वान् ब्राह्मणों को चित्रित किया। ब्लेक के चित्र ने सुझाव दिया कि गीता का महत्व गुप्त ज्ञान के रूप में बौद्धिक श्रम और शाही विजय के माध्यम से पहले से छिपी हुई परम्परा के भीतर अपने अज्ञात रूप से प्राप्त हुआ।

काफी अनुकूल परिस्थितियों के वावजूद भी विल्किन्स के अनुवाद ने अपने प्रारम्भिक दशकों में ज्यादा महत्त्व प्राप्त नहीं किया। धीरे–धीरे जिज्ञासा स्वरूप विद्वानों द्वारा इसे गम्भीर अध्ययन के लिए जगह दी गई। विलियम जोन्स ने उन लोगों को आशीर्वादात्मक यह सलाह दी कि " from a correct idea of Indian religion and literature to forget all that has been written on the subject, by ancients and moderns, before the publication of Gita (Jones 1799-363) " विल्किन्स के अनुवाद ने पूरे यूरोप के साथ अटलांटिक में अपना रास्ता बना दिया। जहाँ यह अमेरिकी ट्रांसकेडेटलिस्तौ के लिए एक प्रमुख ग्रन्थ बन गया।

4. थामस कालाईल

थामस कालाईल ने गीता के विल्किन्स के अनुवाद की एक प्रति राल्फ वाल्डो एमर्सन को प्रस्तुत की। जो उनके प्रेरणा का सबसे बड़ा स्रोत साबित हुई। इससे कानकार्ड भी प्रभावित था। अमेरिका अन्य सभी सामान आन्दोलनों के लिए कानकार्ड का ऋणी था।

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भगवद्गीता के प्रायः सभी अनुवादकों ने इसे साहित्यिक कार्य, एक काव्य या दार्शनिक काव्य के रूप में माना लेकिन शास्त्र के रूप में नहीं माना।

5. जे० जे० काकबर्न थाम्पसन, एडविन अर्नाल्ड और जान डेविस

जे० जे० काकबर्न थाम्पसन 1853 में भगवद्गीता या " The saered Lay – A Sanskrit philosophical poem" तथा जान डेविसने 1882 में हिन्दू दर्शन भगवद्गीता या "The sacred lay & A Sanskrit philosophical poem. तथा एडविन अर्नाल्ड ने (1900) में द सांग सेलेस्टियल या भगवद्गीता " The song celestial or Bhagavad-Gita Famous Marvellous Sanskrit" को प्रसिद्ध अद्भुत संस्कृत काव्य के रूप में सन्दर्भित करते हैं। जिसमें सरल एवं आदर्श भाषा के रूप में दार्शनिक प्रणाली को प्रस्तुत करता है ।

एडविन अर्नाल्ड ने भगवद्गीता के अपने अनुवाद की प्रस्तावना में लिखा है कि 'Bhagavad Gita as famous mavelous sanskrit poem in which in Plan and noble language- it unflods a philosophical systems.' और उसका विश्वास

था कि जब यह अनुदित होगा तो अंग्रेजी साहित्य को बढ़ायेगा।

6. श्री पुरोहित स्वामी

श्री पुरोहित (1882–1946) में हिन्दू भिक्षु था। वह 1931 में ब्रिटेन से भारत आया। इन्होंने भारतीय दर्शन और भगवद्गीता पर व्याख्यान देने की श्रृंखला से कार्य शुरू किया।

पुरोहित स्वामी एक प्रसिद्ध आयरिश कवि, नाटककार और साहित्य के क्षेत्र में नोबल पुरस्कार के विजेता (W-B- yets) डब्लू. बी० एटस के सम्पर्क में आये। जिनको आध्यात्मिकता से गहरा लगाव था। इन्होंने थियोसोफिकल सोसायटी के माध्यम से 1886 में हिन्दू दर्शन को प्रस्तुत किया था।

पुरोहित स्वामी की दो पुस्तकों के बारे में डब्ल्यू बी० यॉट्स ने बताया प्रथम पुस्तक 1932 में मैकमिलन लंदन से प्रकाशित हुई जिसका है– शीर्षक "An Indian monk with introduction by W. B. yeats- द्वितीय पुस्तक 1934 में फैवर एण्ड फैवर लंदन से प्रकाशित हुई । जिसका शीर्षक " Bhagwan Shri Hamsa, The Holy mountain, Translated by Shri Purohit Swami with Introduction-"

डब्ल्यू वाट्स के आग्रह पर पुरोहित स्वामी ने भगवद्गीता पर एक टिप्पणी लिखी। जिसे ब्रिटिश जन सामान्य पाठक सरलता से समझ सके। इन्होंने प्राचीन भारतीय अवधारणाओं और संस्कृत नियमों का उपयोग करने से परहेज किया जो अंग्रेजी भाषियों के लिए अनभिज्ञ था। फिर भी वह गीता पाठ के प्रत्येक शब्द को अंग्रेजी में अनुवाद करने में सफल रहे। याट्स ने स्वामी के कार्य को प्रकाशित करने में मदद की। इस उद्देश्य के लिए डब्ल्यू० बी० याट्स ने ''फैवर एण्ड फैवर'' के प्रसिद्ध प्रकाशन भण्डार से सम्पर्क किया। जहाँ पर विद्वान् कवि टी० एस० इलियट सम्पादक थे।

डब्ल्यू० बी० याट्स की इच्छा थी कि पुस्तक में टी० एस० इलियट भूमिका लिखें, जिससे पुस्तक की प्रतिष्ठा और स्वीकार्यता बढ़ेगी। लेकिन इलियट की इच्छा यह नहीं थी। इलियट के हस्तक्षेप के बावजूद फेवर एण्ड फेवर ने पुरोहित स्वामी द्वारा लिखित चार पुस्तकों के प्रकाशन पर विचार किया।

7. एडल्स हक्सले

एडल्स हक्सले ने विभिन्न कड़ियों में गीता की प्रतीकात्मक व्याख्याओं को समझाया जो बाद में पुस्तक के रूप में प्रसिद्ध हो गयी। इसमें इन्होंने गीता के सार्वभौमिक बारहमासी दर्शन को स्पष्ट किया है। इसमें उन्होंने स्पष्ट किया है कि ″ The Bhagvad Gita is the most systematic statement of spiritual evolution of endowing value to man& kind- It is one of the most clear and comprehensive summaries of perennial philosophy ever revealed; Hence its enduring value is subject not only to India but to all of Humanity-" अर्थात् भगवतगीता मानव जाति के लिए अंतिम मूल्य के आध्यात्मिक विकास का सबसे व्यवस्थित कथन है। यह कभी भी प्रकट किए गए बारहमासी दर्शन के सबसे स्पष्ट और व्यापक सारांशों में से एक हैय इसलिए इसका मूल्य केवल भारत ही नहीं बल्कि पूरी मानवता के अधीन है।

8. ए० वी० वैन वुइटेन

ए० वी० वैन वुइटेन एक पारम्परिक विद्वान व अनुवादक थे। ये शिकागो विश्वविद्यालय के (South Asian Languages and civilizations) दक्षिण एशियाई भाषाओं और सभ्यताओं के विभाग में संस्कृत के एक इण्डोलाजिस्ट और प्रोफेसर थे। अपने स्वल्प जीवन के अन्त में इन्होंने मुख्य रूप से महाभारत के अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित किया। जेम्स० एल० फिट् जरगाल्ड द्वारा सम्पादित ए० वी० वैन वुइटेन द्वारा भगवदगीता का अनुवाद और उनके मरणोपरान्त 1981 में गीता के विद्वानों और उत्साही छात्रों द्वारा बहुत अधिक मूल्यांकित किया गया। महत्त्वपूर्ण अनुवाद के आधार पर उसका अनुवाद और गहराई से विद्वानों के द्वारा परिचय और कई उपयोगी पाद टिप्पणियों के साथ अध्ययन किया गया। इसकी प्रामाणिक प्रस्तुति और स्पष्टता को स्पष्ट करने के लिए प्रशंसा की जाती है। यह अपने शुद्ध प्रतिपादन और मूलपाठ की प्रत्यक्षता को बनाएँ रखने के लिए प्रशंसित है।

9. एकनाथ ईश्वरन

एक नाथ ईश्वर एक विद्वान और आध्यात्मिक शिक्षक थे। जिन्होंने ध्यान पर कई पुस्तकें लिखीं। उन्होंने भगवद्गीता, उपनिषद् और धम्मपद का भी अनुवाद किया। कहा जाता है कि ईश्वरन ने गीता में गाँधी के प्रभाव में रूचि विकसित की जिसे यह अपनी छोटी उम्र में मिले थे। भगवद्गीता का एकनाथ ईश्वरन का अनुवाद स्पष्ट एवं सुन्दर शब्दों में अंग्रेजी में प्रस्तुत किया जो पढ़ने में सरल है। एकनाथ ईश्वरन ने तीन खण्डों में टिप्पणी भी दी 'The Bhagavad Gita for Daily living' तथा साथ में भगवद्गीता के सार के लिए भगवद्गीता के सार नामक एक सरल टिप्पणी भी की।

ईश्वरन ने गीता की शिक्षाओं को आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगी बताया। प्रकृति की वास्तविकता, अलाव का भ्रम, पहचान की खोज, योग का अर्थ और भक्ति को व्यवस्थित करने के तरीके के बारे में गीता पर विचार किया गया है। यह पुस्तक गीता के मुख्य संदेश को ध्यान में रखती है कि ध्यान और आध्यात्मिक विषयों के अभ्यास के माध्यम से हमारे संघर्ष को कैसे हल किया जाए और जीवन की गहरी एकता के बनाए रखे ।

10. क्रिस्टोफर ईश्वरवुड

क्रिस्टोफर ईश्वरवुड एक अंग्रेजी उपन्यासकार, नाटककार और लेखक था। 1925 में क्रैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी छोड़ने के बाद इन्होंने अपने स्कूल के दोस्त डब्ल्यू ड्यूडन के साथ (1907–1973) तक यूरोप और फिर चीन (1938) में यात्रा की।

ईश्वरवुड और ड्यूडन ने इग्लैण्ड में वामपंथी साहित्य के तीसवीं पीढ़ी के शुरूआती कोर का गठन किया ।

जनवरी 1939 में आडन और ईश्वरवुड ने एडक्स हक्सले से मित्रता की, जिसका उन्होंने कभी–कभी सहयोग किया। ये हक्सले के माध्यम से दक्षिणी कैलिफोर्निया के वेदान्त सोसायटी के प्रमुख स्वामी प्रभवानन्द के सम्पर्क में आये और उनके शिष्य बन गये। स्वामी प्रभवानन्द के साथ कर मिलकर ईश्वरवुड ने भगवद्गीता का एक नया अंग्रेजी अनुवाद किया जिसे बाद में प्रकाशित किया गया । ईश्वरवुड पूरी तरह से भिक्षु नहीं वन पाये फिर भी प्रत्येक सप्ताह मंदिर में अपने जीवन के बाकी हिस्सों में, प्रार्थना करने और व्याख्यान करने के लिए हिन्दू बना

और कई काम भी किये। जिसमें जीवनी के रूप में Ramkrishna &Disciples 1965 में लिखा। अपनी अन्तिम पुस्तक " My Guru & Disciples " 1980 में अपने हिन्दू धर्म के परिवर्तन स्वामी प्रभवानंद के समर्पण को अंकित किया है।

11. ईसाई मशीनरी अनुवादों की दृष्टि

ईसाई मशीनरी अनुवादकों की दृष्टि में केवल यह दार्शनिक ज्ञान था जिसे जानने की जरूरत है लेकिन निश्चित रूप से यह पवित्र ग्रन्थ नहीं है। इन्होंने निश्चित रूप से भगवद्गीता के अमूर्त दर्शन और देवताओं की पौराणिक कथाओं में निहित हिन्दू अंधविश्वासों के बीच अन्तर किया जो क्रूरता और वासना से लिप्त था। जानडेविस ने 1882 में लिखा है कि–

"This while the high philosophy of Bhagavad gita might approximates some where near to Christian principles. it would not be adequate to redeem the lost souls of the Hindu. इस प्रकार हिन्दू धर्म और गीता पर मिशनरी लेखन का प्राथमिक उद्देश्य यह था कि यह उन कार्यों की मान्यताओं को जान सके जिन्हें वे बदलना चाहते थे जिससे भविष्य के मिशनर ईसाई धर्म की रक्षा करने के लिए तैयार हो सके।

यद्यपि मिशनरी और साम्राज्यवादी हित हमेशा मेल नहीं खाते थे, लेकिन इस तरह की अनुवाद–गतिविधि ने भारतीय संस्कृति के प्रमुख पहलुओं के बारे में ज्ञान का एक माध्यम बनाने में मदद की, जो दोनों अपने–अपने उद्देश्यों के लिए आकर्षित और उपयोग कर सकते थे। व्याख्या के साझा तरीके, भाषाओं के प्रति साझा दृ ष्टिकोण, उनके अन्तर्सम्बन्धों और साझा अनुवाद तकनीकों ने उनके गैर यूरोपीय एवं अन्य की साझा समझ में योगदान दिया।

बोध /अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न –क

क. निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. आचार्य शंकर ने उपनिषदों की कितनी संख्या स्वीकार की है ?
2. फ्रैंच यात्री जिन उपनिषदों को फ्रांस ले गया और लातिन भाषा में अनुवाद किया ,उस अनुवाद का नाम क्या था ?
3. ब्रह्मा विष्णु और महेश जो क्रमशः सृष्टि स्थिति और विनाश के प्रतीक हैं इस्लाम के अनुसार इनसे मिलते जुलते नाम क्या हैं ?
4. चार्ल्स जॉनस्टन द्वारा 1896 में किन–किन उपनिषदों का अनुवाद डबलिन से प्रकाशित कराया ?
5. Dogmas of Buddism ग्रन्थ के लेखक कौन हैं ?

बोध प्रश्न ख

ख. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. **उपनिषदों का संदेश** नामक पुस्तक के लेखक———————— हैं।
2. **उपनिषद् एक अध्ययन** के लेखक ————————————हैं।
3. गीता को अंग्रेजी में अनुदित करने वाले प्रथम भारतीय ————————थे।

4. **द सीक्रेट बुक ऑफ द ईस्ट** के सम्पादक ————————————हैं।
5. भगवद्गीता का सर्वप्रथम अनुवाद ————————————में किया गया।

बोध प्रश्न ग

ग. सत्य और असत्य की पहचान कीजिए–

1. जॉन डेविस ने विदेशी फिलोलॉजिकल लाइब्रेरी द्वारा भगवद्गीता का अंग्रेजी गद्य में अनुवाद किया गया।
2. जॉन डेविस ने गीता का अनुवाद The song celestial के नाम से किया था–
3. The Bhagvad gita the song of the master के नाम से चार्ल्स जॉन स्टन ने गीता का अनुवाद किया।
4. The song of god Bhagvad Geetaके नाम से M- Rodd co Hollywood ने गीता का अनुवाद प्रकाशित किया।
5. फ्रेडरिक श्लेगल का ही अन्य नाम कार्ल बिल्हेम फ्रेडरिक है।

अभ्यास प्रश्न

1. गीता और उपनिषद के महत्व पर प्रभाव डालिए ?
2. गीता और उपनिषद का पश्चिमी समाज पर प्रभाव स्पष्ट कीजिए ?
3. उपनिषद और गीता का विश्व साहित्य में स्थान स्पष्ट कीजिए ?
4. गीता और उपनिषदों की समानताओं के बारे में बताइए ?
5. उपनिषद् एवं गीता के भारतीञ अनुवादकों एवं पाश्चात्य विद्वानों का परिचय दीजिए ?
6. उपनिषद् एवं गीता पर अनुदित कृतियों का परिचय दीजिए ?
7. उपनिषद् एवं गीता दर्शन के पाश्चात्य अनुवादकों एवं विद्वानों का परिचय लिखिए?

7.11 सारांश

उपनिषद् एवं गीता दोनों ही मानव समाज और जीवन को व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए महत्वपूर्ण है। भारतीय समाज पर तो उपनिषद् एवं गीता का प्रभाव साक्षात् रूप से देखा ही जा सकता है। इसके साथ ही पश्चिमी देशों के समाज पर भी इनका प्रभाव स्पष्टरूप से दिखाई देता है। इसी कारण किसी ने इन्हें रहस्यात्मक ज्ञान की कुँजी कहा है तो कोई मोक्ष प्राप्ति के अन्तिम साधन के रूप में स्वीकार करता है।

उपनिषद् और गीता दोंनो ही भारतीय ज्ञान के मणिरत्न हैं अतः दोंनो का स्थान अद्वितीय है। उपनिषदों की संख्या लगभग १०८ स्वीकार की जाती है। जिनमें से १० उपनिषदों पर आचार्य शंकर का भाष्य प्राप्त होता है। इन उपनिषदों में जीव, जगत, आत्मा, परमात्मा, ब्रह्म, परा, अपरा आदि विद्याओं की बार–बार चर्चा की गई है। इन विद्याओं को दृष्टान्तों के माध्यम से मानव जीवन के वास्तविक सत्य को समझाने का प्रयास किया गया है। जिसका पश्चिमी समाज पर भी गहरा प्रभाव दिखाई देता है।

गीता–भारतीय एवं पश्चिमी दोंनो समाजों पर गीता का गहरा प्रभाव हुआ है। अध्यात्मदृप्रबन्धन से लेकर सामान्य जीवन के छोटे–छोटे व महत्वपूर्ण विषयों के लेकर गीता में शलोकों के माध्यम से उनका वर्णन व समाधान दिया गया है। विश्व की

लगभग ५० भाषाओं में गीता का अनुवाद हो चुका है। जिससे इसके महत्व व उपयोगिता को समझा जा सकता है। गीता और उपनिषद् दोनों ही पश्चिमी समाज के लिए भी एक आदर्श बनकर उभरे हैं। अतः इन दोनों के प्रभाव को पश्चिमी समाज में स्पष्टरूप से देखा जा सकता है।

उपनिषद् और गीता के अनुवाद प्रचार–प्रसार का कार्य भारत सहित यूरोपीय देशों में अनवरत रूप से होता रहा है। भारतीय विद्वान् स्वामी विवेकानन्द, रवीन्द्र नाथ टैगोर, आचार्य विनोबा भावे, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् एवं पाश्चात्य विद्वान् मैक्समूलर, डी. ह्यूम, शोपनहावर, चार्ल्स जानस्टर, आटो वोट लिंक, राबर्ट अर्नेस्ट, पाल डायसन आदि गीता के भौतिक और आध्यात्मिक महत्व की चर्चा करते हुए उसकी भूरी–भूरी प्रशंसा की है। गीता को लेकर भी पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों का मत ग्रहण करने योग्य है। दोनों ही प्रकार के विद्वान गीता को लेकर बहुत ही उत्सुक दिखायी देते हैं। कुछ भारतीय और पाश्चात्य विद्वान रहें हैं जिन्होंने गीता के प्रति अपनी ज्ञानलिप्सा की अभिव्यक्ति की है। भारतीय विद्वान् काशीनाथ त्र्यंबक तेलंग गीताप्रेस गोरखपुर ने बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में आम लोगों के बीच गीता के सन्देश को फैलाने का महान का कार्य किया। डॉ. आर जी. भण्डारकर, टी. आर. श्रीनिवास अयंगर आदि विद्वानों ने भी गीता का अनुवादकार्य किया जिससे भारत सहित पश्चिमी जगत में गीता के ज्ञान का प्रवाह तेज़ हो सका।

पाश्चात्यों में थियोफिस्टों द्वारा 1785 में गीता का अंग्रेजी अनुवाद किया गया। जिसके बाद इसका विस्तार यूरोप और अमेरिका तक फैला।

श्री मिशका सिन्हा, चार्ल्स विल्किन्स, हेनरी डेविड थोरो, जे. राबर्ट, शोपेनहावर और एल्डस हक्सले आदि ने अपने शोधपत्रों एवं अनुवादों के माध्यम से गीता के दार्शनिक ज्ञान से विश्व को कृतार्थ किया। डेविस ने यह पता लगाया कि महात्मा गाँधी और स्वामी विवेकानन्द ने किस प्रकार भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में गीता का प्रयोग किया। फ्रांसीसी अनुवादक जीन डेविस लांजुनाइस, अब्बे परांदे, जर्मन अनुवादक श्लेगल, फ्रांज थर्टमैन हेनसिक हिमकर, पुरोहित स्वामी व अन्य पाश्चात्य विद्वान् Richard H Davis, विलियम ब्लेक, थामस कालाईल, जे जे काकबर्न, थाम्पसन, एड़विन अर्नाल्ड, क्रिस्टोफर ईश्वर वुड आदि विद्वानों ने अपनी बुद्धि के अनुरूप गीता दर्शन पर अपने विचार और अनुवाद कार्य किये, जिससे पश्चिमी साहित्य समृद्ध हुआ तथा समाज की सृजनात्मकता में भी वृद्धि हुई।

7.12 शब्दावली

1. लिप्सा –इच्छा, अभिलाषा,लालसा
2. भाष्य–व्याख्या,विवरण
3. समृद्ध–सम्पन्न,वैभवशाली
4. प्राथमिक–प्रारम्भिक,मौलिक
5. आकर्षक–मनोहारी,मनमोहक
6. सृजनात्मकता–रचनात्मकता

7.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. Gita https:/htm wikipedia org/wiki/ Srimat Bhagvat https://Srinivasrao& -com/Tag/Travlcution of the bitainto-europeah Language.
2. The Bhagavad Gita and the west: The Esoteric Significance of the Bhagavad gita and its pelatior to the Epistles of poul by Rudolf Steeiner-
3. Bhagavad Gita & world Religions
4. Impact of Bhagvad Gita on west/Arise Bharat
5. Influence of Bhagavad Gita Wikipedia the free encyclopaedia
6- Jones A- Hijiya. The gita of Robert oppunheimer Proceeding of the American Philosophy Society
7. The Gita of Ji Robert Oppenhinver by Jams a Hijiya.
8. Prof- of History University of massachusetts-
9. श्रीमद्भागवद्गीता, मधुसूदन सरस्वतीकृत गूठार्थदीपिका संस्कृतटीका तथा प्रतिभाभाष्य हिन्दी सहित
10. श्रीमद्भागवद्गीता, एस० राधाकृष्णन, कृत व्याख्या का हिन्दी अनुवाद राजपाल एण्ड सन्स १९६९
11. शाहजादा मुहम्मद दाराशिकोह कृत सिर्रे अनुवाद, ५० उपनिषदों की फारसी का अनुवाद सहित सानुवाद, भुवन वानी ट्रस्ट लखनऊ, १९७५
12. Introduction to Sirr 1 Akbar, or the Persian Translation of the upanishadas by Dara Shukoh, Tara Cand, Taban Printing Press 1957
13. www.vskgujarat.com उपनिषदों का फारसी अनुवाद
14. श्रीमद्भागवदगीता व्याख्याकार मदन मोहन अग्रवाल, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी, १९८४
15. Deussen, The Philosophy of the Upanishads

7.14 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–क

1. 10
2. औपनिखत ,यह 1809 में प्रकाशित हुआ।
3. जिब्राएल, मीकाइल और इस्त्राजील।
4. कठ, प्रश्न और छान्दोग्य ।
5. डी. ह्यूम ।

बोध प्रश्न –ख

1. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन
2. आचार्य बिनोबा भावे
3. काशीनाथ त्र्यम्बक तेलंग (1858–1893)

4. मैक्समूलर
5. चार्ल्स विल्किन्स द्वारा 1784 ई में।

बोध प्रश्न–ग

1. सत्य
2. असत्य
3. सत्य
4. सत्य
5. सत्य

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर –

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखेंगे ।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY